

आरम्भ वर्ष - 2023,
चातुर्मासिक - Tri-Annual

वर्ष - द्वितीय
अङ्क - द्वितीय (अप्रैल - 2024)
ऑनलाइन प्रकाशन

बुन्देलखण्ड विमर्श BUNDELKHAND VIMARSH

(भारतीय ज्ञान परम्परा की सान्दर्भिक एवं पुनरीक्षित शोधपत्रिका)

(Refereed and Reviewed Research Journal of Indian Knowledge System)

: प्रकाशक :



बरौदी संस्कृति संस्कृत संस्कार शिक्षा समिति

BARAUDI SANSKRITI SANSKRIT SANSKAR SHIKSHA SAMITI

ग्राम - बरौदी, पत्रालय - सनौरा, जिला - दतिया (मध्यप्रदेश), भारत, 475686.

Vill.- Barodi, P.O.-Sanora, Distt.-Datia(Madhya Pradesh) Bharat,475686.

Cont.- +91 88277 66640, +91 78799 58816,

Email:- sanskritsamiti17@gmail.com, Website:- www.sanskritsamiti.org

प्रधान सम्पादक

डॉ. उपेन्द्र भार्गव

सम्पादक

डॉ. आनन्द प्रकाश शुक्ल

सह सम्पादक

डॉ. कपिल कुमार भार्गव, शिरीन कुरैशी

सम्पादक मण्डल

प्रो. श्यामदेव मिश्र

प्रो. प्रसाद गोखले

डॉ. अवतारजीत सिंह

डॉ. नितिन जैन

डॉ. अखिलेश कुमार द्विवेदी

डॉ. रामकुमारी

डॉ. रमण मिश्र

डॉ. मोहन बैरागी

डॉ. लवलेश मिश्र

प्रो. नीलाभ तिवारी

प्रो. पराग जोशी

डॉ. कृष्णकान्त तिवारी

डॉ. देशबन्धु

डॉ. दिनेश रसाळ

डॉ. हिमांशु द्विवेदी

डॉ. प्रभाकर पाण्डेय

डॉ. रूपाली सारये

डॉ. रमा आर्या

प्रबन्धन एवं तकनीकी सम्पादक

विवेक कुमार शर्मा

राज भार्गव

वाई श्री तेजस्वी

सदस्यता विवरण

वार्षिक सदस्यता	-	1500/- (एक हजार पांच सौ रुपये मात्र)
एक अंक	-	750/- (सात सौ पचास रुपये मात्र)

: प्रकाशक :

बरौदी संस्कृति संस्कृत संस्कार शिक्षा समिति

सम्पादकीय

“स्वाध्यायप्रवचनाभ्यं न प्रमदितव्यम्” इस उपनिषद् वाक्य के ध्येय को जीवन लक्ष्य बनाकर भारतीय ज्ञान परम्परा के सिद्धान्तों द्वारा अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से अनेक शोध अध्येता, अनुसंधाता तथा गवेषकों ने प्राचीन काल से चारों वेद, छह वेदांग, अठारहों पुराण, रामायण, महाभारत, शताधिक उपनिषद्, दर्शन और विस्तृत संस्कृत वाङ्मय के अथाह ज्ञानसिन्धु को पार करने का प्रयत्न किया है और वर्तमान में भी यह यात्रा अनवरत रूप से प्रवाहमान है। प्रत्येक शोधार्थी के लिए यह आवश्यक है कि वह निरन्तर स्वाध्याय करे और स्वाध्याय से उपार्जित ज्ञान को अपने आलेख द्वारा अन्य ज्ञान पिपासुओं तक सम्प्रेषित करने का यत्न भी करे तभी अध्ययन एवं अनुसन्धान की सार्थकता सिद्ध होती है। ज्ञानप्रवाह को निष्कल्मष बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि शोध, अनुसन्धान एवं गवेषणा को प्रोत्साहित किया जाए तथा शोधार्थियों को पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराये जाने चाहिए जिससे संचित ज्ञान की अभिरक्षा तथा भविष्य के लिए उसका पोषण सुनिश्चित किया जा सके।

वर्तमान में भारतीय ज्ञान परम्परा के साथ अन्य आधुनिक ज्ञान - विज्ञान के समावेशी एवं अन्तर्विषयी तथा भारतीय भाषाओं में शोध अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने के लिए जो प्रावधान तथा प्रयत्न वर्तमान ‘राष्ट्रीय शिक्षा नीति’ में किये गए हैं वे निश्चित रूप से शिक्षा में क्रान्ति का सूत्रपात करते हैं। भारतीय ज्ञान मीमांसा में योग, ज्योतिष आयुर्वेद, वेदान्त, राजनीति, धर्म, समाज, अर्थशास्त्र तथा मनोविज्ञान आदि ऐसे अनेक महत्वपूर्ण विषय हैं जिनका अध्ययन अन्य विषयों के परस्पर सामंजस्य से नूतन दृष्टि प्रदान करता है।

अतः प्रस्तुत शोध पत्रिका 'बुन्देलखण्ड विमर्श' भारतीय ज्ञान परम्परा में निहित लोक कल्याण परक विषयों के प्रचार - प्रसार, उन्नयन एवं शोध उद्देश्यों को पूर्ण करने हेतु सुधी पाठकों, विद्वज्जनों, समीक्षकों, आलोचकों के समक्ष प्रस्तुत है। हमारा लक्ष्य है कि पत्रिका में प्रकाशित होने वाले शोधपत्रों के माध्यम से हमारे अध्येता शोधार्थियों के ज्ञान में वृद्धि हो तथा वे सान्दर्भिक शोध की दिशा में प्रवृत्त हो सकें। हमें आशा है कि हमारे प्रिय पाठकों के महत्वपूर्ण सुझाव और मार्गदर्शन हमें निरन्तर प्राप्त होंगे जिनसे हम अपनी गुणवत्ता विकसित कर सकेंगे तथा आपके लिए सुदृढ़ बौद्धिक पाथेय उपलब्ध करा सकेंगे।

आपके स्नेह एवं सहयोग का आकाङ्क्षी

डॉ. आनन्द प्रकाश शुक्ल

चैत्र शुक्ल एकादशी
१९ अप्रैल २०२४

विषयानुक्रमिका

1	सन 1857 की क्रांति में झाँसी की वीरांगनाओं का योगदान	डॉ. रमा आर्य	1-8
2	'छँगुरी' : लोक की पीड़ा को वाणी देने वाली	गौरव गौतम	9-14
3	बुंदेली भाषा की राजनीति : एक पड़ताल	किसान गिरजाशंकर कुशवाहा अर्चना मिश्रा	15-23
4	नागार्जुन के उपन्यास 'कुम्भीपाक' में चित्रित स्त्री संघर्ष	अवनीश सिंह नरवरिया डॉ. सोलंकी प्रतिभा	24-31
5	समकालीन ग़ज़लों की भाषाई संरचना	यशवंत काछी डॉ. वंदना चराटे	32-37
6	डॉ. जयप्रकाश कर्दम के उपन्यास 'उत्कोच' के नायक 'मनोहर' के आदर्शवादी व्यक्तित्व का मूल्यांकन	सुमीर ठाकरे डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन	38-41